nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास संवाद

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50; वार्षिक ₹ 5.00

जनवरी 2015 • वर्ष 20, अंक 1

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

नई दिल्ली में प्रकाशक सम्मिलन	2
कोच्चि पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र का उद्घाटन	2
रायपुर साहित्य उत्सव में व्यंग्य पाठ	3
दिल्ली के महिला हाट में पुस्तक मेले का आयोजन	3
शारजाह पुस्तक मेला	4
इंदौर पुस्तक मेला	4
जैसलमेर में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन	5
न्यास मुख्यालय में नववर्ष सम्मिलन	5
पुस्तक परिचय	6
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय	7
सेवानिवृत्ति	8

नवीनतम प्रकाशन

सुदर्शन : संकलित कहानियाँ
स्मिता चतुर्वेदी
पृ. 208 ₹ 185
ISBN 978-81-237-7077-2

पुस्तक-प्रेमियों की प्रतीक्षा खत्म

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2015 में आपका स्वागत है

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, एक बार फिर दस्तक दे रहा है। 14 से 22 फरवरी, 2015 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में चलने वाले ज्ञान के इस महाकुंभ में पुस्तक-प्रेमियों, पाठकों, लेखकों व प्रकाशकों का स्वागत है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा सन् 1972 से प्रारंभ विश्व पुस्तक मेले का यह 23वाँ पड़ाव है। रा.पु. न्यास द्वारा अब तक इस पुस्तक मेले के 22 सफल आयोजन किए जा चुके हैं। अपनी लोकप्रियता के चलते वर्ष 2012 तक द्विवार्षिक रूप से आयोजित होने वाला यह मेला वर्ष 2013 से वार्षिक उत्सव का रूप ले चुका है।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला भागीदारों को इस बढ़ते पुस्तक उद्योग के साथ व्यापार करने का अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। पुस्तक प्रोन्नयन, सह-प्रकाशन व्यवस्था व व्यापार के उद्देश्य से भी यह मेला एक आदर्श स्थान है। मेले के दौरान विभिन्न साहित्यिक एवं प्रकाशन संबंधी सम्मेलनों तथा गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। साथ ही, यह मेला विश्व के प्रमुख प्रकाशन गृहों को भागीदारी के लिए अपनी ओर आकर्षित करता है।

हाल ही के वर्षों में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में कई नई विशेषताओं का समावेश किया गया है। इसमें व्यावसायिक कार्यक्रम जैसे 'सीईओ स्पीक' तथा 'नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच' (राइट्स टेबल) व पुस्तक-प्रेमियों को अपने प्रिय लेखकों से रूबरू करवाने के लिए 'लेखक मंच' की शुरुआत की गई है जिससे पुस्तक मेले के लिए पाठकों का उत्साह दोगुना हो गया है। अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन समाज के बीच मेले की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए इसमें 'विशिष्ट अतिथि देश' की अवधारणा की शुरुआत भी की गई है। वर्ष 2013 में विशिष्ट अतिथि देश का सम्मान फ्रांस को तथा वर्ष 2014 में यह सम्मान पोलैंड को प्राप्त हुआ।

वर्ष 2015 में सिंगापुर विशिष्ट अतिथि देश होगा और दक्षिण कोरिया की 'फोकस देश' के रूप में भागीदारी होगी। मेले में अंतरराष्ट्रीय समाज की प्रतिस्पर्धात्मक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इस वर्ष से न.दि.वि.पु. मे. में 'फोकस देश' का सम्मान देने की शुरुआत भी की जा रही है। अतः स्वाभाविक तौर पर सिंगापुर तथा दक्षिण कोरिया एक वृहत् प्रतिनिधिमंडल को लेकर इस पुस्तक मेले में अपनी नवीनतम पुस्तकों के साथ उपस्थित होंगे। ये देश अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से भारत के लोगों को न केवल विदेशी साहित्य से अवगत कराएँगे वरन अपनी कला, संस्कृति आदि अनेक आयामों से भी

भारतीय लोगों को परिचित कराएँगे। भारत के लोग सिंगापुर एवं दक्षिण कोरिया की प्रस्तुतियों के माध्यम से उन देशों के साहित्य-कला-संस्कृति आदि अनेक पहलुओं को देखकर जहाँ एक ओर उन देशों के संबंध में बेहतर समझ बना सकेंगे व वहीं मेले में हमारे विशिष्ट विदेशी मेहमान भी भारतीय साहित्य के साथ-साथ भारतीय कला एवं संस्कृति से अवगत हो सकेंगे।

मेले की दैनंदिन घटनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से न्यास हिंदी एवं अँग्रेजी में प्रतिदिन बुलेटिन का प्रकाशन करेगा जो आगंतुकों एवं पुस्तक-प्रेमियों के लिए उपयोगी साबित होंगे।

हमें विश्वास है कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित किया जाने वाला यह वार्षिक उत्सव पूर्व में आयोजित मेलों की भाँति इस वर्ष भी एक सफल आयोजन साबित होगा ।

नई दिल्ली में प्रकाशक सम्मिलन

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, 2015 के आयोजन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने हेतु राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 10 नवंबर, 2014 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में 'प्रकाशक सम्मिलन' का आयोजन किया गया। इस सम्मिलन में लगभग 50 प्रकाशकों एवं प्रकाशन संघ के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के 23वें संस्करण का 14 से 22 फरवरी, 2015 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजन किया जाएगा।

इस अवसर पर एनबीटी के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने अपने संबोधन में इस वर्ष नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में शुरू की जाने वाली नई गतिविधियों की चर्चा की। इस वर्ष मेले के व्यापारिक कार्यक्रमों में सीईओ स्पीक तथा नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच (नई दिल्ली राइट्स टेबल) शामिल होंगे। प्रतिलिप्यधिकार मंच 17 व 18 फरवरी, 2015 को आयोजित किया जाएगा।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, 2015 में विशिष्ट अतिथि देश का सम्मान सिंगापुर को दिया गया है जो प्रकाशकों के एक व्यापक समूह के साथ मेले में भाग लेगा व दो देशों के बीच पुस्तक व्यापार को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न संवादात्मक सत्रों का आयोजन करेगा। इसके अतिरिक्त मेले में 'फोकस देश' की अवधारणा की शुरुआत भी की जा रही है व इस वर्ष यह सम्मान दक्षिण कोरिया को दिया जाएगा।

कोच्चि पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र का उद्घाटन

"लोकतंत्र की सफलता के लिए ज्ञान आवश्यक है। पुस्तकें विचारों को उत्पन्न कर ज्ञान का प्रसार करती हैं जिससे लोकतंत्र को शक्ति मिलती है।" ये विचार जस्टिस वी.आर. कृष्ण अय्यर ने कोच्चि में एनबीटी पुस्तक विक्रय तथा प्रोन्नयन केंद्र के उद्घाटन-अवसर पर व्यक्त किए। यह उल्लेखनीय है कि हाल ही में जस्टिस अय्यर ने अपना 100वाँ जन्मदिवस मनाया है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान, लेखक एवं आलोचक, प्रो. एम.के. सानू ने यह इच्छा व्यक्त की कि यह पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र एक ऐसा सांस्कृतिक स्थान बन जाए, जहाँ पुस्तक-प्रेमी अपने विचारों एवं साहित्य पर आधारित विषयों पर चर्चा व संवाद स्थापित कर सकें। उन्होंने आशा भी जताई कि यह केंद्र कोच्चि की संस्कृति को उत्प्रेरित करेगा तथा सुझाव दिया कि केंद्र द्वारा संगीतमय संध्या व चित्रकला प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया जाना चाहिए।

न्यास (एनबीटी) के अध्यक्ष, श्री ए.सेतुमाधवन ने बताया, "राज्य भाषा संस्थान व बाल साहित्य संस्थान भी इसी परिसर में अपने-अपने आउटलेट खोल रहे हैं। जल्द ही यह स्थान एक 'पुस्तक अड्डा' का रूप ले लेगा।"

"एनबीटी जवाहरलाल नेहरू की सोच का परिणाम है, उनकी दूरदर्शी सोच संभवतः यही थी कि भारत में बिना प्रकाशनगृह के सभी भाषाओं में उचित मूल्यों में पुस्तकों का प्रकाशन करना व एक सांस्कृतिक स्थान का निर्माण करना संभव नहीं है। अपने स्थापना वर्ष 1957 से अब तक एनबीटी एक लंबा सफर तय कर चुका है। वर्तमान में एनबीटी द्वारा एक वर्ष में 30 से 35 भाषाओं में पुनर्मुद्रण सहित लगभग 1,000 पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है।" श्री सेतुमाधवन ने कहा।

इससे पूर्व, रा.पु.न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने अपने स्वागत संबोधन में कहा, "पुस्तक प्रोन्नयन केंद्रों को खोलने की इस नई पहल का उद्देश्य देशभर के लोगों तक पुस्तकें पहुँचाना है। हमारा उद्देश्य विभिन्न राज्यों में 'पुस्तक अड्डा' खोलना है। यह युवा पीढ़ी को पुस्तकों एवं पठन के प्रति जागरूक करने के लिए लिया गया एक कदम है।" उन्होंने यह भी बताया कि जल्द ही न्यास द्वारा कटक, ओडिशा में भी पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र खोले जाएँगे।

रा.पु.न्यास द्वारा देशभर के विभिन्न शहरों में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र खोले गए हैं जिनमें शामिल हैं– गुवाहाटी, पटना, अगरतला, चेन्नै व हैदराबाद। कोच्चि पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र पार्क एवेन्यू रोड पर रिवेन्यू टॉवर में स्थित है।

रायपुर साहित्य उत्सव में व्यंग्य पाठ

पिछले दिनों छत्तीसगढ़ के रायपुर साहित्य उत्सव में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की ओर से 14 दिसंबर, 2014 को एक व्यंग्य पाठ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के व्यंग्यकार उपस्थित थे। इस व्यंग्य पाठ में भिलाई से रवि श्रीवास्तव, दुर्ग से विनोद साव, रायपुर से डॉ. महेंद्र कुमार ठाकुर, श्री विनोद शंकर शुक्ल ने अपनी व्यंग्य रचनाओं का पाठ किया। इस अवसर पर व्यंग्य-यात्रा के संपादक डॉ. प्रेम जनमेजय ने कहा, "आज जैसे-जैसे हम बड़े हो रहे हैं समाज की विसंगतियाँ भी बड़ी होती जा रही हैं। विषय खुद-ब-खुद रचनाकार को उकसाते हैं। ऐसे में लेखक की ईमानदारी उसे 'यूज' होने से बचाती है और हमेशा उसे उत्साहित करती है और विषय पर करारा चोट करने के लिए प्रेरित भी करती है।" उन्होंने आगे कहा, "अच्छा और सार्थक व्यंग्य वही है जो हमें औने-पौने से न केवल आगाह करता है बल्कि लुहार की तरह चोट करने पर विवश भी करता है कि समाज की राजनीति पर हथौड़ा सही लगे। यह हथौड़ा किसी का सिर नहीं फोड़ता बल्कि उसे उस हद तक ले आता है कि सामने वाला पक्ष निर्दयी न हो, बल्कि सहानुभूति से समाज की परवाह करे, उपेक्षा न करे। यही सोच व्यंग्यकार को बड़ा बनाती है और समाज के प्रति उसके योगदान को भी सराहनीय बनाती है।" सत्र में उपस्थित विद्वानों में जयप्रकाश मानस, डॉ. सुधीर शर्मा, रमाकांत श्रीवास्तव, अशोक सिंघई, शुभ्रा ठाकुर के अलावा परदेशी राम वर्मा, जे.एस. नायडू, तुहिन देव, अलंग आदि थे।

सत्र का संचालन न्यास में हिंदी संपादक व छत्तीसगढ़ के प्रभारी डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने किया।

दिल्ली के महिला हाट में पुस्तक मेले का आयोजन

उत्तरी दिल्ली नगर निगम के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 13 से 18 दिसंबर, 2014 को महिला हाट, दिल्ली गेट, दिल्ली में पहले 'उत्तरी दिल्ली नगर निगम पुस्तक उत्सव' का आयोजन किया गया। इस उत्सव का उद्घाटन सांसद, श्री मनोज तिवारी द्वारा किया गया। उद्घाटन अवसर पर उन्होंने कहा, ''पुस्तकों का मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि ये मुझे ज्ञान प्रदान करती हैं।'' श्री तिवारी ने कहा कि ऐसे पुस्तक मेले पाठकों को विश्वभर में विभिन्न विषयों पर उपलब्ध पुस्तकों की जानकारी प्रदान करते हैं। उन्होंने यह भी कहा, ''हमें पाठकों तक पुस्तकें पहुँचानी चाहिए जिससे कि वे अपनी जड़ों से जुड़े रहें।''

इस अवसर पर सभी विशिष्ट अतिथिगणों ने अपने विचार व्यक्त किए जिनमें शामिल हैं– अध्यक्ष, स्थायी समिति, श्री मोहन भारद्वाज; सदन की अध्यक्षा, श्रीमती मीरा अग्रवाल; विपक्ष के अध्यक्ष, श्री मुकेश गोयल; महापौर, उत्तरी दिल्ली नगर निगम, श्री योगेंद्र चंडोलिया; आयुक्त, उदिननि, श्री पी.के. गुप्ता। उपस्थित सभी वक्ताओं ने पठन-प्रवृत्ति के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने यह आशा जताई कि पाठकों, विशेषकर युवाओं एवं बच्चों के लिए यह पुस्तक मेला लाभकारी साबित होगा। इस अवसर पर रा. पु. न्यास द्वारा प्रकाशित एक विशिष्ट स्मारिका का भी लोकार्पण किया गया।

इससे पूर्व, एनबीटी के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत तथा उत्तरी दिल्ली नगर निगम द्वारा दिल्ली के नागरिकों को पठन-प्रवृत्ति की ओर उन्मुख करने का प्रथम प्रयास है।

उत्सव में 30 से अधिक प्रकाशकों ने अपनी पुस्तकों का प्रदर्शन किया। दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों से आए विद्यार्थियों ने इस पुस्तक उत्सव में आयोजित पुस्तक प्रोन्नयन गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

शारजाह पुस्तक मेला

33वें शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले का उद्घाटन 5 नवंबर, 2014 को शारजाह के शासक एवं विद्वान डॉ. सुल्तान बिन मोहम्मद अल खासिमी द्वारा किया गया। इस ग्यारह दिवसीय मेले की शुरुआत विश्वभर से आए प्रकाशकों एवं प्रतिलिप्यधिकार एजेंटों की दो-दिवसीय व्यावसायिक बैठक से हुई।

शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला विश्व में आयोजित होने वाले पुस्तक उत्सवों में से एक प्रमुख उत्सव बन चुका है जिसमें भारत, अन्य दक्षिण एशियाई देशों, यूरोप व संयुक्त राज्य अमेरिका से बड़ी संख्या में भागीदार शामिल होते हैं। इस मेले में लगभग 60 देशों से आए 1,260 प्रकाशकों ने भाग लिया।

मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा लगाये गए भारतीय मंडप का उद्घाटन संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय दूतावास, श्री टी.पी. सीताराम द्वारा किया गया। इस अवसर पर पंयाचती राज मंत्री, केरल सरकार, डॉ. एम.के. मुनीर भी उपस्थित थे। भागीदारों में लगभग 100 प्रकाशक भारत से आए थे, जिनमें से अधिकतर प्रकाशक केरल से थे।

मेले में एनबीटी के स्टॉल ने हज़ारों आगंतुकों एवं पुस्तक प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित किया। इन पुस्तक-प्रेमियों में भारतीय प्रवासी, राजदूत, विद्वान तथा विद्यार्थी शामिल थे।

इस अवसर पर डैन ब्राउन, शशि थरूर, अमीश त्रिपाठी, चेतन भगत, शिव खेड़ा, शशि कुमार तथा अमिताभ घोष जैसे प्रसिद्ध लेखकों के सार्वजनिक व्याख्यानों में पुस्तक-प्रेमियों का जमावड़ा देखने को मिला। मेले में मलयालम लेखक तथा फिल्मी हस्तियों जैसे सेतु, एमपी वीरेन्द्र कुमार, पेरूमपदवम श्रीधरन, अकबर कक्काटिल, बोबन कुनचाक्को, के.जी. शंकर पिल्लई,

एम.के. मुनीर, वानीदास इलैयावूर, मंजू वाटियर, पी.पी. रामचंद्रन, के.आर. मीरा, प्रभा वर्मा, पी.के. पाराक्काडवु, कुरीपुझा श्रीकुमार, वी. मधुसूदनन नायर, लक्ष्मी नायर तथा अलंकोड़े लीलाकृष्णन आदि ने भी बड़ी संख्या में आगंतुकों को अपनी ओर आकर्षित किया।

मेले में रा.पु.न्यास का प्रतिनिधित्व मलयालम संपादक, श्री रूबिन डी क्रूज़ व न्यास के सहायक निदेशक, श्री मयंक सुरोलिया ने किया।

इंदौर पुस्तक मेला

''घर-घर पुस्तकें पहुँचाने के लिए पुस्तकालय आंदोलन शुरू करना होगा। किताबें हमें भाषा सिखाती भी हैं और सुधारती भी हैं। यह भी बताती हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति कैसी भी भाषा का प्रयोग कर रहा हो, पर हमें विनम्र और शालीन भाषा का प्रयोग ही करना चाहिए।'' ये विचार लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने समिति परिसर में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति द्वारा 6 से 14 दिसंबर, 2014 तक आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले के शुभारंभ के अवसर पर कहे।

इस अवसर पर प्रसिद्ध लेखकों, डॉ. प्रभात भट्टाचार्य और डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी को समिति शताब्दी सम्मान से अलंकृत भी किया गया। पुस्तक मेले का उद्घाटन करते हुए श्रीमती महाजन ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इतने विद्वान लेखकों को सम्मानित करने का अवसर मिल रहा है और पुस्तक मेले के उद्घाटन का सौभाग्य भी प्राप्त हो रहा है। डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि परसाईं जी व्यंग्य में जो बातें कहा करते थे वो आज यथार्थ में घटित होती जा रही हैं। डॉ. भट्टाचार्य ने कहा कि मैं बांग्लाभाषी होकर भी हिंदी में लिखना पसंद करता हूँ। उन्होंने कहा कि पुरस्कार का सही हकदार पाठक होता है। लेखक सिर्फ उसका माध्यम होता है। पुस्तक मेले में देश के लगभग 100 विख्यात प्रकाशकों ने भाग लिया व इसमें जीवन से जुड़े विभिन्न विषयों पर लिखी लाखों पुस्तकें प्रदर्शित की गईं।

इस अवसर पर 'पत्रकारिता की चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषय पर आधारित विमर्श का आयोजन हुआ जिसे वरिष्ठ पत्रकार श्री राधेश्याम शर्मा (पूर्व संपादक, ट्रिब्यून) ने संबोधित किया, श्री शर्मा ने कहा कि आज के दौर में मीडिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती उसकी विश्वसनीयता को बनाए रखना है, पहले अखबार पर छपी लाइनों पर लोग आँख मूँदकर भरोसा करते थे, लेकिन अब टीवी पर देखी बातों पर भी उन्हें आसानी से यकीन नहीं होता। मीडिया के छात्रों को ख़ास तौर पर संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में युवा ग्लैमर देखकर मीडिया के व्यवसाय की तरफ आकर्षित हो रहे हैं, लेकिन उन्हें ये ख्याल रखना चाहिए कि ये बहुत ही ज़िम्मेदारी का क्षेत्र है।

''छोटी पत्रिकाएँ भले ही चमकदार, बड़े प्रसार संख्या वाली न हों, लेकिन वे देश की अस्मिता की पहचान, सभ्यता, संस्कृति और साहित्य का संरक्षण करती हैं।'' यह उद्गार प्रख्यात साहित्यकार प्रभाकर श्रोत्रिय ने मेले में आयोजित की गई विचार गोष्ठी 'वर्तमान परिदृश्य में पत्रिकाओं की भूमिका' में व्यक्त किए।

पुस्तक मेला का आठवाँ दिन पण्यश्लोका देवी अहिल्याबाई को समर्पित रहा। यह शाम अहिल्याबाई की स्मृति में महिला लेखकों को समर्पित रही। इस अवसर पर इंदौर लेखिका संघ और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित संध्या में मुंबई से सूर्यबाला, भोपाल से उर्मिला शिरीष और इंदौर की ही डॉ. रश्मि रमानी ने अपनी रचना और रचना प्रक्रिया से श्रोताओं को अभिभूत कर दिया।

मेले के अंतिम दिन पुरस्कार वितरण के साथ पुस्तक मेला का समापन हुआ। इस अवसर पर पुस्तक मेला में हुई चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया। तीन वर्गों में हुई इस प्रतियोगिता के 15 विजेता विद्यार्थियों को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आकर्षक पुरस्कार दिये गए। प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत वीणा पत्रिका के संपादक डॉ. विनायक पाण्डेय, समिति के प्रचारमंत्री श्री अरविन्द ओझा, हरेराम वाजपेयी, देवकृष्ण सांखला और अरविन्द जवलेकर ने किया।

पुस्तक मेले का समन्वय एवं संचालन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में हिंदी के सहायक संपादक, श्री पंकज चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

जैसलमेर में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

''पुस्तकें मनुष्य के जीवन का दर्पण हैं। निःसंदेह इस राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी से जैसलमेर वासियों को शोध संदर्भ की दृष्टि से उपयोगी साहित्य पढ़ने का सुअवसर मिलेगा।'' ये शब्द जिला कलेक्टर, जैसलमेर, एन.एल. मीणा ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 2 से 7 दिसंबर, 2014 तक जिला पुस्तकालय, जैसलमेर में आयोजित छह-दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह के अवसर पर कहे।

इस अवसर पर सार्वजनिक जिला पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष, महेन्द्र कुमार दवे; वरिष्ठ साहित्यकार, माँगीलाल सेवक; वरिष्ठ इतिहासविद्, नंदकिशोर शर्मा; वरिष्ठ शिक्षाविद् मनोहर लाल ओझा; सहायक निदेशक सांख्यिकी, डॉ. बृजलाल मीणा व सतत शिक्षा एवं साक्षर सचिव, बराईदीन साँवरा उपस्थित थे।

जिला कलेक्टर ने जिला पुस्तकालय जैसलमेर में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में जिले के समस्त नागरिकों, साहित्यकारों, लेखकों, इतिहासविदों, जिला शिक्षा अधिकारियों, छात्र-छात्राओं को इस प्रदर्शनी का अवलोकन करवाए जाने पर विशेष बल दिया ताकि वे इस उपयोगी पुस्तक प्रदर्शनी का अधिकाधिक लाभ भी ले सकें। इस अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ साहित्यकार माँगीलाल सेवक ने कहा कि पुस्तकें हमें ज्ञान देती हैं, बिना पुस्तक पढ़े कोई इन्सान अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता है।

डॉ. एन.एल. मीणा ने प्रदर्शनी के आयोजन के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास को बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी में उच्च कोटि का साहित्य किफ़ायती मूल्यों पर उपलब्ध है तथा अनेक महान लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों का संग्रहण किया गया है जो नगरवासियों के लिए बहुत ही ज्ञानवर्धक साबित होगा। कलेक्टर ने न्यास के अधिकारियों को समय-समय पर जैसलमेर में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित करते रहने का आग्रह किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के उपनिदेशक, श्री इमरानुल हक द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी का समन्वय एवं संचालन किया गया।

न्यास मुख्यालय में नववर्ष सम्मिलन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के नई दिल्ली स्थित न्यास-मुख्यालय में पहली जनवरी, 2015 को एक अनौपचारिक नववर्ष सम्मिलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर न्यास के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने समस्त न्यासकर्मियों को नववर्ष की शुभकामनाएँ दीं व सभी को परिश्रम से कार्य करके नई ऊँचाइयों तक पहुँचने की प्रेरणा दी। उन्होंने यह भी कहा कि आगामी नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, 14 से 22 फरवरी, 2015 तक आयोजित किया जाएगा जिसके लिए सभी न्यासकर्मियों को पूरी निष्ठा एवं परिश्रम से मिलकर कार्य करना है। आयोजन के अंत में चाय व अल्पाहार हुआ।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सभी पाठकों को नववर्ष की शुभकामनाएँ!

पुस्तक परिचय

रचना का जनपक्ष (लेख संग्रह)
शिवनारायण पृ. 192 ₹ 360
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
वरिष्ठ लेखक-संपादक शिवनारायण के समय-समय पर लिखे लेखों का संग्रह। विद्वान लेखक ने जनजीवन के विविध पक्षों पर लेखनी चलाई है और धर्म, बाज़ार, प्रेम, हिंदी स्त्री आदि विविध पक्षों को केंद्र में रखकर अपने सारगर्भित विचार रखे हैं।

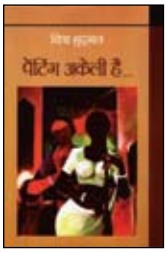

पेंटिंग अकेली है (कहानी संग्रह)
चित्रा मुद्गल पृ.144 ₹ 250
सामयिक बुक्स, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली-110002
लेखिका का 12वाँ कहानी संग्रह, जिसमें दस कहानियाँ संग्रहीत हैं। अपने समय-समाज के सरोकारों से बावस्ता लेखिका की कहानियों में अकसर समसामयिक कालखंड की कोई-न-कोई समस्या होती है जिससे उनका रचनाकार दो-चार होता है। पाठक उनकी कहानियों की प्रतीक्षा करते हैं।

सीधी बात साहित्यकारों से... (साक्षात्कार)
लालित्य ललित पृ. 252 ₹ 160
सस्ता साहित्य मंडल, एन-77, पहली मंजिल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001
साक्षात्कार विधा साहित्य की एक महत्वपूर्ण किंतु कठिन विधा है। साक्षात्कारकर्ता अकसर साक्षात्कारदाता के संबंध में पूरी तफतीश के साथ सम्मुख होता है और उनसे वह अनकहा निकलवा लेता है जो अन्यथा लेखक किसी से साझा नहीं करता। यहाँ 31 नए-पुराने हिंदी साहित्यकारों से समय-समय पर लिये गए साक्षात्कारों का दुर्लभ संग्रह है।

मन पखेरू उड़ चला फिर (कविता संग्रह)
सुनीता शानू पृ. 128 ₹ 195
हिंद-युग्म, 1, जिया सराय, हौज़ ख़ास, नई दिल्ली-110016,
अपने पास-पड़ोस परिवेश और पर्यावरण से शब्दों का तिनका-तिनका जोड़कर, उसे अनुभूतियों की चाशनी में लपेटकर जो परोसा है वही कविता बन हमारे-आपके सामने प्रस्तुत है। संग्रह में रोजमर्रा की छोटी-छोटी बातें हैं, सहज-सरल शब्दों में।

चतुष्कोण एवं अन्य नाटक
व्रात्य बसु पृ. 204 ₹ 450
अनुवाद : सोमा बंद्योपाध्याय
राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली
प्रस्तुत पुस्तक में चार नाटकों को शामिल किया गया है। इन नाटकों में आज का समय एवं मनुष्य के भीतर का अंतर्द्वंद्व मुखर हुआ है। यह समय अपनी तमाम दुष्प्रवृत्तियों और कुटिलताओं तथा अच्छाइयों के साथ इन नाटकों में उपस्थित है।

काहे नैना लागे
सीमा रानी पृ. 94 ₹ 125
दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय, एफ. 50/17, दक्षिण ताल्या टोपे नगर, शरद जोशी मार्ग, भोपाल-462003
छह कहानियों का संग्रह। शीर्षक संग्रह कहानी सबसे लंबी कहानी है। लेखिका ने अपनी कहानियों के लिए कथ्य और तथ्य अपने परिवेश से लिया है। कथा की बुनावट में कुछ कमियाँ हो सकती हैं, लेकिन एक कवयित्री के कथाकार समूह में शामिल होने का स्वागत तो किया ही जाना चाहिए।

कहने को बहुत कुछ था (प्रभाष जोशी का प्रतिनिधि लेखन)
संपा : सुरेश शर्मा पृ. 416 ₹ 750
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
हिंदी पत्रकारिता के शिखर पुरुष प्रभाष जोशी एक पत्रकार, संपादक ही नहीं वरन समय-सजग चिंतक एवं समर्थ सर्जक साहित्यकार भी थे। उन्होंने एक विशाल कालखंड के भारतीय जनजीवन को देखा, भोगा और उसके साक्षी रहे। कहना न होगा कि इस पुस्तक में समय का पोस्टमार्टम करते उनके विविधपक्षी लेखन का संग्रह है।

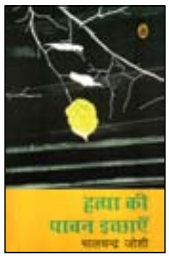

हत्या की पावन इच्छाएँ (कहानी संग्रह)
भालचंद्र जोशी पृ. 144 ₹ 250
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
आठ कहानियों का संग्रह। इनके यहाँ यथार्थ भी है, और कहानी भी। इनकी कहानियों में इनके भीतर का लेखक अप्रकट रहता है, लेकिन यथार्थ खिले फूल-सा प्रकट होता है। और जहाँ कहानी है उनमें आख्यानात्मक कल्पना की प्रबलता है, फंतासी का प्रयोग भी।

अधूरा कोई नहीं (कविता संग्रह)
आर. अनुराधा पृ. 100 ₹ 250
पहले स्तन कैंसर और अब हड्डियों के कैंसर से जूझती अनुराधा एक वीर योद्धा हैं जो अपनी लड़ाई किसी हथियार से नहीं वरन आशा और उम्मीद की टिमटिमाती लौ को हथियार बनाकर लड़ रही हैं। इसी से इनकी कविताएँ आशा और उम्मीद की कविताएँ बन गई हैं।

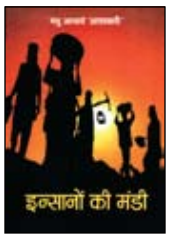

इन्सानों की मंडी (उपन्यास)
मधु आचार्य 'आशावादी' पृ. 128 ₹ 200
सूर्य प्रकाशन मंदिर, दाऊजी रोड (नेहरू मार्ग) बीकानेर-334005
मजदूर मंडी की कड़वी सच्चाइयाँ यहाँ मुखरित हुई हैं जिसमें मजदूरों के दर्द, पीड़ा, बेचैनी और मजबूरी को महसूसा जा सकता है। उपन्यास के मुख्य पात्र, एक दंपती, के माध्यम से दिहाड़ी मजदूरों की टीस यहाँ प्रतिबिंबित हुई है।

लकीरों के आर-पार (नवगीत संग्रह)
गीता पंडित पृ. 128 ₹ 210
शलभ प्रकाशन, नई दिल्ली
'मन की खूँटी टँगे हुए हैं', 'समय के किस मोड़ पर हम', 'नववर्ष के नाम नेह की', 'मैं भी बोलूँ तुम भी बोलो', 'देह नहीं थी मन भी थी मैं' आदि शीर्षक से पचासेक नवगीत संग्रहीत हैं इस संग्रह में, और हर नवगीत के अलग-अलग आस्वाद हैं। आज के इस दौड़ते-भागते समय में कहीं दो पल बैठकर इन्हें पढ़ें-गुनें, सुकून मिलेगा।

आकर्षण (कविता संग्रह)
चंद्रकला जासू पृ. 122 ₹ 100
वैभव प्रकाशन, चंद्रमहल, 19/227 चौबे पाड़ा, करौली-322241, राजस्थान
शताधिक कविताओं का संग्रह। कविताओं का विषय-क्षेत्र बहुत दूर तक विस्तृत है। जीवन के विविध रूप-रंग उपस्थित हैं यहाँ—अनुभवों से सिक्त, भावपूर्ण, राग-विराग, हर्ष-विषाद सब कुछ एक साथ, एक संग्रह में।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

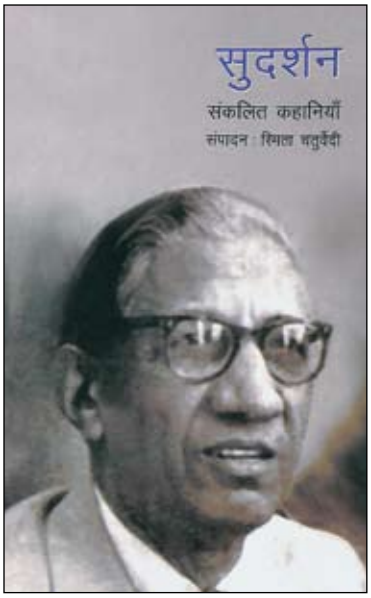

सुदर्शन : संकलित कहानियाँ

संपा : स्मिता चतुर्वेदी

पृ. 208 ₹ 185

सुदर्शन (1896-1967) प्रेमचंद युग के महत्वपूर्ण कथाकार हैं। उनका वास्तविक नाम बदरीनाथ था। उनका जन्म सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। सुदर्शन की कहानियों का मुख्य लक्ष्य समाज व राष्ट्र को स्वच्छ व सुदृढ़ बनाना रहा है। उन्होंने अपने युग में सात्विक पाठ्य सामग्री के माध्यम से हिंदी पाठकों को मूल्य दृष्टि प्रदान की। सुदर्शन की कहानियों में देश और दुनिया के प्रति उनके गहन प्रेम से उपजी एक विशेष प्रकार की उपदेशात्मकता दिखाई देती है। उन्होंने अपने युग की तात्कालिक सामाजिक और राजनैतिक घटनाओं को दृष्टि में रखकर अपनी कहानियों की रचना की है। सुदर्शन की कहानियाँ कला की दृष्टि से चाहे उच्च श्रेणी की न हों लेकिन विषय-वस्तु की दृष्टि से उनमें मौलिकता है। उनकी 'हार की जीत' जैसी कालजयी रचना के 'बाबा भारती' से हिंदी के पाठक अनभिज्ञ नहीं हैं। उनकी कहानियों में नैतिकता का आग्रह झलकता है, परंपरा की विजय दृष्टिगत होती है मगर साथ ही आधुनिकता की विरल उपस्थिति भी दिखाई देती है। उन्होंने पहली बार आधुनिक स्त्री को अपनी कहानियों का पात्र बनाया और इन्हीं प्रगतिशील स्त्रियों के माध्यम से पाठकों के समक्ष एक आदर्श स्थिति को प्रस्तुत किया। लाहौर की उर्दू पत्रिका 'हजार दास्ताँ' में उनकी अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। सुदर्शन को गद्य और पद्य दोनों में महारत हासिल की। मुख्यधारा विषयक साहित्य-सृजन के अतिरिक्त आपने अनेक फिल्मों की पटकथा और गीत लिखे। सोहराब मोदी की 'सिकंदर' (1941) सहित अनेक फिल्मों की सफलता का श्रेय उनके पटकथा लेखन को जाता है। अपनी समग्रता में ये कहानियाँ उनके युग की बौद्धिक यात्रा का आनंद देती है।

ISBN 978-81-237-7077-2

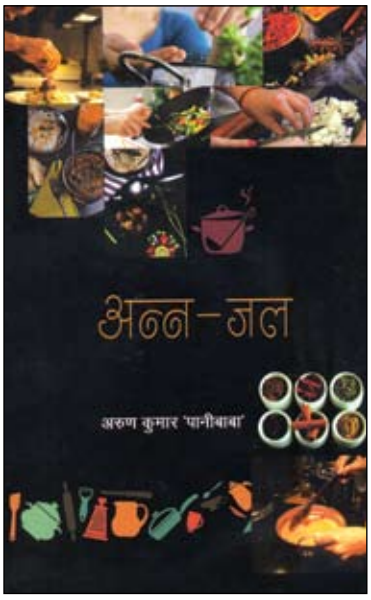

अन्न-जल

अरुण कुमार 'पानीबाबा'

पृ. 184 ₹ 185

भारत की पाक-कला यहाँ के मौसम, तापमान, आर्द्रता और उसके अनुरूप शरीर की जरूरतों की आपूर्ति के लिए विकसित हुई। भले ही उसे पर्व-त्योहार-परंपराओं-आस्थाओं का नाम दे दिया गया हो, लेकिन हमारे पारंपरिक भोजन-भट्ट भलीभाँति जानते थे कि किस इलाके में, किस ऋतु में, क्या कच्चा माल उपलब्ध होता है और वहाँ के रहने वालों को किस काल में किस विटामिन, प्रोटीन या अन्य पौष्टिक तत्व की जरूरत होती है। यह पुस्तक ऐसे ही भारतीय व्यंजनों का परिचय, उनको बनाने के नुस्खे और उसके गुण-दोषों पर विमर्श करती है।

ISBN 978-81-237-7229-5

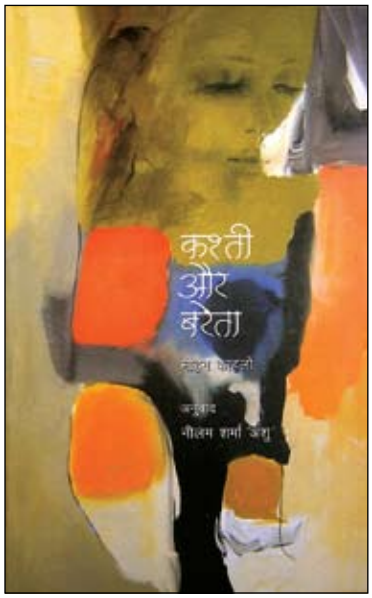

कश्ती और बरेता

मोहन काहलों

अनु : नीलम शर्मा 'अंशु'

पृ. 126 ₹ 125

'कश्ती और बरेता' उपन्यास का संपूर्ण विषयगत विस्तार जागीरदारी मर्यादा और दुनियावी रिश्तों की गड़बड़ में फँसी स्त्री के दुखांत को साकार करता है। प्रतीकात्मक तौर पर शैली की जीवन-नय्या कभी डोलती है और कभी सँभलती है, परंतु अंत में बेबसी के बरेते में गड़कर रह जाती है। इस तरह बरेता उसकी जिंदगी के एकांत का प्रतीक बनकर प्रकट होता है। शैली का दुखांत जागीरदारी व्यवस्था वाले पुरुष प्रधान समाज की कद्रों-कीमतों के संकट की उपज है। उपन्यास में जागीरदारी विरासत की इन्हीं कद्रों-कीमतों को कटाक्ष भरे अंदाज में चित्रित किया गया है।

ISBN 978-81-237-7047-5

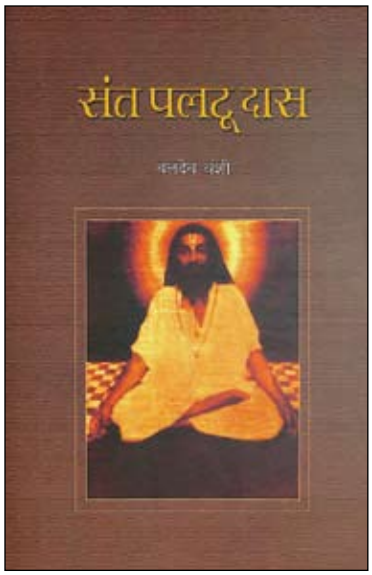

संत पलटू दास

बलदेव वंशी

पृ. 122 ₹ 135

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने संत पलटू दास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर व्यापक चर्चा की है। संत पलटू दास का अध्यात्म अनुभव विरल कोटि का एवं समृद्ध रहा है। पलटू दास ने अपनी वाणियों के माध्यम से जाति, वर्ण, संप्रदाय, हिंसा जीव हत्या आदि का विरोध किया। उनकी वाणियों में एक मानवीय, संवेदनशील, समतामूलक एवं उन्मुक्त समाज की वकालत की गई है।

ISBN 978-81-237-7075-8

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें

अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का सूची-पत्र
मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4077/2015-17
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2015-17
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/01/2015

सेवानिवृत्ति

श्रीमती विमला भारद्वाज रा.पु.न्यास में लगभग 34 वर्षों की लंबी सेवा के उपरांत 31 दिसंबर, 2014 को सेवानिवृत्त हो गईं। सन् 1980 में अवर श्रेणी लिपिक के रूप में सेवारंभ के पश्चात प्रोन्नत होकर सहायक के पद से सेवानिवृत्त हुईं। अपनी सेवा-अवधि में उन्होंने न्यास के उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय, लेखा, संपादकीय व प्रदर्शनी विभागों में अपनी सेवाएँ दीं।

श्री माँगे राम ठाकरान रा.पु.न्यास में 35 वर्षों की दीर्घ सेवा के उपरांत 31 दिसंबर, 2014 को सेवानिवृत्त हो गए। सन् 1979 में न्यास में सेवारंभ करने के पश्चात उन्हें अनेक प्रोन्नतियाँ मिलीं और वे सहायक (तदर्थ) पद से सेवानिवृत्त हुए। अपनी लंबी कार्य-अवधि में उन्होंने न्यास में विभिन्न विभागों, यथा प्रकाशन, लेखा, विक्रय, उ.क्षे.का. एवं स्थापना में कार्य किया। न्यास के सभी सहकर्मी इन दोनों के अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करते हैं।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

14 से 22 फरवरी, 2015

अधिक जानकारी के लिए कृपया देखें

www.newdelhiworldbookfair.gov.in

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास संवाद भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेल: office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा अरावली प्रिन्टर्स एवं पब्लिसर्स प्रा.लि., डब्ल्यू 30, ओखला फेज-II, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से टाइपसेट एवं मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070